श्री तारा देवी कवचम

Shri Tara Devi Kavacham

Gurudev Raj Verma

Mob- +91-9897507933

WhatsApp- +91-7500292413

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

विनियोगः– अस्य श्री ताराकवचस्य अक्षोभ्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, भगवती तारा देवता, सर्वमंत्रसिद्धि समृद्धये जपे विनियोगः।

कवचम्– प्रणवो मे शिरः पातु ब्रह्मरूपा महेश्वरी। ललाटे पातु ह्रींकारो बीजरूपा महेश्वरी।।

स्त्रींकारो वदने नित्यं लज्जारूपा महेश्वरी। हूंकारः पातु हृदये भवानीरूप शक्तिधृक्।।

फट्कारः पातु सर्वांगे सर्वसिद्धिफलप्रदा। खर्वा मां पातु देवेशी गण्डयुग्मे भयापहा।।

निम्नोदरी सदा स्कन्धयुग्मे पातु महेश्वरी। व्याघ्रचर्मावृता कट्यां पातु देवी शिवप्रिया।।

पीनोन्नतस्तनी पातु पार्श्वयुग्मे महेश्वरी। रक्तवर्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदाऽवतु।।

ललजिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी। करालस्या सदा पातु लिंगेदेवी हरप्रिया।।

पिंगोग्रैकजटा पातु जंघायां विघ्ननाशिनी। प्रेतखर्परभृद्देवी जानुवक्रे महेश्वरी।।

नीलवर्णा सदा पातु जानुनी सर्वदा मम। नागकुण्डलधर्त्री च पातु पादयुगेः ततः।।

नागहार धरा देवी सर्वांगं पातु सर्वदा। नागकंकधरा देवी पातु प्रान्तरदेशतः।।

चतुर्भुजा सदा पातु गमने शत्रुनाशिनी। खड्गहस्ता महादेवी श्रवणे पातु सर्वदा।।

नीलाम्बरधरा देवी पातु मां विघ्ननाशिनी। कर्त्रिहस्ता सदा पातु विवादे शत्रुमध्यतः।।

ब्रह्मरूपधरा देवी संग्रामे पातु सर्वदा। नागकंकणधर्त्री च भोजने पातु सर्वदा।।

शवकर्णा महादेवी शयने पातु सर्वदा। वीरासनधरा देवी निद्रायां पातु सर्वदा।।

धनुर्बाणधरा देवी पातु मां विघ्नसंकुले। नागाञ्चितकटी पातु देवी मां सर्वकर्मसु।।

छिन्नमुण्डधरा देवी कानने पातु सर्वदा। चितामध्यस्थिता देवी मारणे पातु सर्वदा।।

द्वीपिचर्मधरा देवी पुत्रदारधनादिषु। अलंकारान्विता देवी पातु मां हरवल्लभा।।

रक्ष रक्ष नदीकुञ्जे हूं हूं फट् सुसमन्विते। बीजरूपा महादेवी पर्वते पातु सर्वदा।।

मणिभृद्वज्रिणी देवी महाप्रतिसरे तथा। रक्ष रक्ष सदा हूं हूं ॐ ह्रीं स्वाहा महेश्वरी।।

पुष्पकेतुरजार्हेति कानने पातु सर्वदा। ॐ ह्रीं वज्रपुष्पं हुं फट् प्रान्तरे सर्वकामदा।।

ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे पातु पुत्रान्महेश्वरी। हूं स्वाहा शक्तिसंयुक्ता दारान् रक्षतु सर्वदा।।

ॐ आं हूं स्वाहा महेशानी पातु द्यूते हरप्रिया। ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोत्सारिणी देवी विघ्नान्मां सदाऽवतु।।

ॐ पवित्रवज्रभूमे हुं फट् स्वाहा समन्विता। पूरिका पातु मां देवी सर्वविघ्न विनाशिनी।।

ॐ आः सुरेखे वज्ररेखे हुं फट् स्वाहा समन्विता। पाताले पातु सा देवी लाकिनी नामसंज्ञिका।।

ह्रींकारी पातु मां पूर्वे शक्तिरूपा महेश्वरी। स्त्रींकारी पातु देवेशी वधूरूपा महेश्वरी।।

हूंस्वरूपा महादेवी पातु मां क्रोधरूपिणी। फट्स्वरूपा महामाया उत्तरे पातु सर्वदा।।

पश्चिमे पातु मां देवी फट्स्वरूपा हरप्रिया। मध्ये मां पातु देवेशी हूंस्वरूपा नगात्मजा।।

नीलवर्णा सदा पातु सर्वतो वाग्भवा सदा। भवानी पातु भवने सर्वैश्वर्यप्रदायिनी।।

विद्यादानरता देवी वक्त्रे नीलसरस्वती। शास्त्रे वादे च संग्रामे जले च विषमे गिरौ।।

भीमरूपा सदा पातु श्मशाने भयनाशिनी। भूतप्रेतालये घोरे दुर्गमा श्रीघनाऽवतु।।

पातु नित्यं महेशानी सर्वत्र शिवदूतिका। कवचस्य च माहात्म्यं नाहं वर्षशतैरपि।।

शक्नोमि गदितुं देवि भवेत्तस्य फलं च यत्। पुत्रदारेषु बन्धूनां सर्वदेशे च सर्वदा।।

न विद्यते भयं तस्य नृपपूज्यो भवेच्च सः। शुचिर्भूत्वाऽशुचिर्वापि कवचं सर्वकामदम्।।

प्रपठन् वा स्मरन्मर्त्यो दुःखशोक विवर्जितः। सर्वशास्त्रे महेशानि कविराड् भवति ध्रुवम्।।

सर्ववागीश्वरो मर्त्योलोकवश्यो धनेश्वरः। रणे द्यूते विवादे च जयस्तत्र भवेद्ध्रुवम्।।

पुत्रपौत्रान्वितो मर्त्यो विलासी सर्वयोषिताम्। शत्रवो दासतां यान्ति सर्वेषां वल्लभः सदा।।

गर्वी खर्वी भवत्येव वादी स्खलति दर्शनात्। मृत्युश्च वश्यतां याति दासास्तस्यावनीभुजः।।

प्रसंगात्कथितं सर्वं कवचं सर्वकामदम्। प्रपठन्वा स्मरन्मर्त्यः शापानुग्रहणे क्षमः।।

आनन्दवृन्द सिन्धूनामधिपः कविराड् भवेत्। सर्ववागीश्वरो मर्त्यो लोकवश्यः सदा सुखी।।

गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्य सुगोपिताम्। तत्रापि कवचं देवि दुर्लभं भुवनत्रये।।

गुरुर्देवो हरः साक्षात्तपत्नी तु हरप्रिया। अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः।।

मंत्राचारा महेशानि कथिताः पूर्ववत्प्रिये। नाभौ ज्योतिस्तथा रक्तं हृदयोपरि चिन्तयेत्।।

ऐश्वर्यं सुकवित्वं च महावागीश्वरो नृपः। नित्यं तस्य महेशानि महिलासंगमं चरेत्।।

पंचाचाररतो मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा। शक्तियुक्तो भवेन्मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा।।

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवासुरमानुषाः। तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवन्ति ते।।

स्वर्गे मर्त्ये च पाताले ये देवाः सिद्धिदायिकाः। प्रशंसन्ति सदा देवि तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम्।।

विघ्नात्मकाश्च ये देवाः स्वर्गे मर्त्ये रसातले। प्रशंसन्ति सदा सर्वे तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम्।।

इति ते कथितं देवि मया सम्यक्प्रकीर्तितम्। भुक्ति मुक्ति करं साक्षात्कल्प वृक्षस्वरूपकम्।।

आसाद्याद्यगुरुं प्रसाद्य य इदं कल्पद्रुमालम्बनं, मोहेनापि मदेन चापि रहितो ज जाड्येन वा युज्यते।।

सिद्धोऽसौ भुवि सर्वदुःखविपदां पारं प्रयात्यन्तके, मित्रंतस्यनृपाश्च देवि विपदोनश्यन्ति तस्याशु च।।

तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि ब्रह्मास्त्रदीनि वै भुवि। तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्वाणी वक्त्रे वसेद् ध्रुवम्।।

इदं कवचमज्ञात्वा तारां यो भजते नरः। अल्पायुर्निर्द्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः।।

लिखित्वा धारयेद्यस्तु कण्ठे वा मस्तके भुजे। तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते।।

गोरोचना कुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा। यावकैर्वा महेशानि लिखेन्मन्त्रं समाहितः।।

अष्टम्यां मंगलदिने चतुर्द्दश्यामथापि वा। संध्यायां देवदेवेशि लिखेद्यन्त्रं समाहितः।।

मघायां श्रवणे वापि रेवत्यां वा विशेषतः। सिंहाराशौगते चन्द्रे कर्कटस्थे दिवाकरे।।

मीनराशौ गुरौ याते वृश्चिकस्थे शनैश्चरे। लिखित्वा धारयेद्यस्तु उत्तराभिमुखो भवेत्।।

श्मशाने प्रान्तरे वापि शून्यागारे विशेषतः। निशायां वा लिखेन्मंत्रं तस्य सिद्धिरचंचला।।

भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं गुरुणा च महेश्वरि। ध्यानधारणयोगेन धारयेद्यस्तु भक्तितः।।

अचिरात्तस्य सिद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा।।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413